अंकुर

हिन्दी

कक्षा - 1

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना, बिहार द्वारा विकसित)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

निदेशक (प्राथमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम के अन्तर्गत
पाठ्य-पुस्तकों का निःशुल्क वितरण ।
क्रय-विक्रय दण्डनीय अपराध ।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

सर्व शिक्षा अभियान : 2017 - 18 -

दो शब्द

बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तकों का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए पाठ्यपुस्तकें ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों के लिए सार्थक, सृजनात्मक एवं सहज हों। हमें यह समझना होगा कि पाठ्सपुस्तकें, बच्चों को किसी निर्धारित ज्ञान तक ले जाने का माध्यम मात्र नहीं है, बल्कि उनके ज्ञान फलक एवं समझ को विस्तृत करने के लिए आरम्भिक सामग्री है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 और बिहार पाठ्यचर्या-2008 में बच्चों के रचनात्मक ज्ञान के विकास को ध्यान में रखकर पाठ्यपुस्तकों के सृजनात्मक स्वरूप एवं भूमिका पर बल दिया गया है। इन दस्तावेजों के आलोक में, वर्ष 2009 में बिहार राज्य के विद्यालयी पाठ्यचर्या-पाठ्यक्रम को तैयार किया गया और फिर उसके आधार पर नवाचारी पाठ्यपुस्तकों के विकास का कार्य आरम्भ हुआ। हमारी मान्यता है कि पाठ्यपुस्तकों का निर्माण कोई एक बार का कार्य नहीं है बल्कि आधुनिक अवधारणाओं और अद्यतन शोधों के आधार पर इनकी निरन्तर समीक्षा एवं उतरोत्तर विकास होते रहना चाहिए, ताकि हमारे बच्चों के हाथों में उनके मन लायक उपयोगी पाठ्यपुस्तकें पहुँच सकें।

इसी क्रम में कक्षा-1 एवं 2 के लिए हिन्दी, अंग्रेजी और गणित के पाठ्यपुस्तकों को नए स्वरूप में विकसित किया गया है, जिसमें पठन-पाठन के लिए पाठों एवं वर्कशीट्स का समृद्ध समावेश है। शिक्षा के अधिकार अधिनियम में वर्ष 2017 में हुए नवीनतम संशोधन के अंतर्गत अधिगम सम्प्राप्ति (लर्निंग आउटकम) को प्राप्त करने के दृष्टिकोण से इन पाठ्यपुस्तकों में पाठों एवं कक्षायी प्रक्रियाओं को विशेष तौर पर संरचित किया गया है। इन पाठ्यपुस्तकों के विकास में राज्य शिक्षण शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार तथा अन्य संस्थाओं के विशेषज्ञों और यहाँ के शिक्षकों की सराहनीय भूमिका रही है, जिसके लिए उनका आभार व्यक्त करते हैं।

हमें आशा है कि इन पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से कक्षा-1 और 2 के स्तर पर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया सुदृढ़ होगी। इन पाठ्यपुस्तकों पर छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों की हमें सदैव प्रतीक्षा रहेगी जिससे इसे और बेहतर बनाया जा सके।

(श्री संजय कुमार सिंह) भा॰प्र॰से॰
राज्य परियोजना निदेशक
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्
पटना।

दिशा बोध

श्री संजय कुमार सिंह (भा०प्र०से०)
राज्य परियोजना निदेशक
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद, पटना

डॉ. मनीष कुमार
निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, पटना

श्री राजीव रंजन प्रसाद
राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद, पटना

डॉ० एस०ए० मोईन
विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, पटना

लेखक समूह

श्री सुमन कुमार सिंह, प्रखंड साधन सेवी, भगवानपुर हाट, सिवान।
श्री चन्दन कुमार पाण्डेय, प्रतिभा पल्लवन पब्लिक स्कूल, जहानाबाद।
सुश्री वर्षा कुमारी, सहायक शिक्षिका, रा० म० वि० रामपुर-31, मनेर, पटना।
श्री कृत प्रसाद, प्रखंड साधन सेवी, हिलसा, नालंदा।
श्री आदित्य नाथ ठाकुर, सहायक शिक्षक, म० वि० माउण्ट एवरेस्ट, कंकड़बाग, पटना।
श्री जुनैद, सहायक शिक्षक, प्रा० वि० टोला परवेज खाँ, नगरा, सारण।
श्री मनीष रंजन, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, म० वि० चैनपुर, संपतचक, पटना।
श्री अजय कुमार, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, गोरखरी, बिक्रम, पटना।
श्री कात्यायन कुमार त्रिपाठी, प्रधान शिक्षक, प्रा० वि० चैलीटाल स्लम, पटना।
श्री अरूण कुमार, विद्याभवन सोसाइटी, पटना।
डॉ. चन्दन श्रीवास्तव, केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

समन्वयक

डॉ. रीता राय, व्याख्याता, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, पटना।

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार, वर्ष 2009 में विद्यालयी शिक्षा के लिए नवीन पाठ्यचर्या-पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया, जिसके आधार पर नवाचारी पाठ्यपुस्तकों के विकास की अपेक्षा की गई। इस संदर्भ में, पाठ्यपुस्तकों का विकास बालकेन्द्रित एवं समावेशी शिक्षा के नजरिए से करने का प्रयास किया गया। साथ ही, समय-समय पर, आवश्यकतानुसार पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा तथा उसके आधार पर उनका संशोधन-परिमार्जन भी किया जाता रहा है। अंततः पाठ्यपुस्तकों को मुद्रित करने का वृहत्त कार्य बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा अनवरत किया जाता है ताकि हमारे विद्यालयों में पढ़नेवाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध कराई जा सके।

इसी क्रम में कक्षा-1 एवं 2 के लिए राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार द्वारा हिन्दी, अंग्रेजी और गणित की पाठ्यपुस्तकों को नए परिमार्जित स्वरूप को प्रस्तुत किया जा रहा है। इन पाठ्यपुस्तकों के अंतर्गत, पाठों के साथ-साथ वर्कशीट्स को प्रचुरता में शामिल किया गया है, ताकि बच्चे उनपर काम करके अपने ज्ञान को पुख्ता कर सकें। इन पाठ्यपुस्तकों के विकास के लिए राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार तथा अन्य भागीदार संस्थाओं एवं विशेषज्ञों का हम आभार व्यक्त करते हैं।

बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता को और उन्नत किया जा सके।

दिलीप कुमार, आई.टी.एस.
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि॰

हिन्दी, कक्षा–1 के लिए सीखने–सिखाने सम्बंधी अपेक्षाएँ
(अधिगम परिणाम/लर्निंग आउटकम)

बच्चे–

- ❖ विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा/और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते जैसे– कविता–कहानी सुनाना, जानकारी के लिए प्रश्न पूछना और प्र नों के जवाब देना, निजी अनु को साझा करना आदि।
- ❖ सुनी सामग्री (कहानी, कविता आदि) के बारे में बातचीत करते हैं, अपनी राय देते हैं, प्रश्न पूछते हैं।
- ❖ भाषा में निहित ध्वनियों और शब्दों के साथ खेलने का आनंद लेते हैं, जैसे– अक्कड़–बक्कड़, ओका–बोक
- ❖ प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) और गैर–प्रिंट सामग्री (जैसे, चित्र या अन्य ग्राफ़िक्स) में अंतर करते हैं।
- ❖ चित्र के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं पर बारीक अवलोकन करते हैं।
- ❖ चित्र में या क्रमवार सजाए चित्रों में घट रही अलग–अलग घटनाओं, गतिविधियों और पात्रों को एक स या कहानी को सूत्र में देखकर समझते हैं और सराहना करते हैं।
- ❖ पढ़ी कहानी, कविताओं आदि में लिपि चिह्नों/शब्दों/वाक्यों आदि को देखकर और उनकी ध्वनियों सुनकर, समझकर उनकी पहचान करते हैं।
- ❖ संदर्भ की मदद से आस–पास मौजदू प्रिंट के अर्थ और उद्दे य का अनुमान लगाते हैं, जैसे– टॉफ़ी कवर पर लिखे नाम को 'टॉफ़ी ', 'लॉलीपॉप' या 'चॉकलेट' बताना।
- ❖ प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) में मौजदू अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाइयों को पहचानते हैं, जैसे– 'मेरा विमला है।' बताओ, यह कहाँ लिखा हुआ है?/ इसमें 'नाम' कहाँ लिखा हुआ है?/'नाम' में में 'म' अँगुली रखो।
- ❖ परिचित/अपरिचित लिखित सामग्री (जैसे– मिड–डे मील का चार्ट, अपना नाम, कक्षा का नाम, मनप किताब का शीर्षक आदि) में रुचि दिखाते हैं, बातचीत करते हैं और अर्थ की खोज में विविध प्रकार युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं, जैसे– केवल चित्रों या चित्रों और प्रिंट की मदद से अनुमान लग अक्षर–ध्वनि संबंध का इस्तेमाल करना, शब्दों को पहचानना, पूर्व अनुभवों और जानकारी का इस्तेमाल क हुए अनुमान लगाना।
- ❖ हिंदी के वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं।
- ❖ स्कूल के बाहर और स्कूल के भीतर (पुस्तक कोना/पुस्तकालय से) अपनी पसंद की किताबों को चुनते हैं और पढ़ने की कोशिश करते हैं।
- ❖ लिखना सीखने की प्रक्रिया के दौरान अपने विकासात्मक स्तर के अनसुार चित्रों, आड़ी–तिरछी रेखा (कीरम–काटे), अक्षर–आकृतियों, स्व–वर्तनी (इंनवेंटिड स्पैलिंग) और स्व–नियंत्रित लेखन (कनवैंश राइटिंग) के माध्यम से सुनी हुई और अपने मन की बातों को अपने तरीके से लिखने का प्रयास करते हैं
- ❖ स्वयं बनाए गए चित्रों के नाम लिखते (लेबलिंग) हैं, जैसे– पेड़ का चित्र बनाकर उसके नीचे पेड़ या लिखना।

कक्षा–1	अंकुर			हिन्दी	
क्रम संख्या	पाठ	दिवस	वर्ण	मात्रा	दिन
1.	हँसते–खेलते	01–13			13
2.	हमारा गाँव (चित्रपठन)	14–19			06
3.	हमारा शहर (चित्रपठन)	20–26			05
4.	प्रार्थना (कविता)	27–29			03
5.	आओ खेलें खेल (चित्रपठन)	30–35			06
6.	चंदा मामा (कविता)	36–51	च, क, ल, म, द, थ	'आ' और 'इ' की मात्रा (ा, ि ी)	15
7.	धम्मक–धम्मक (कविता)	52–67	ग, ह, त, घ, छ, ज	'उ','ऊ' और 'ओ' की मात्रा (ा, ि ी)	15
8.	पुनरावर्तन	68–72			05
9.	पतंग (कविता)	73–87	प, श, ख, र, फ, ट, ढ	'ए' की मात्रा (े)	14
10.	मन करता है (कविता)	88–103	ध, ष, न, ब, स, ड, य, झ	'ऐ' की मात्रा (ै)	15
11.	पुनरावर्त्तन	104–108			05
12.	आलू का पराठा (कविता)	109–124	भ, ण, ठ, व, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र,ड़	'औ' की मात्रा (ौ)	15
13.	पटना का चिड़ियाघर (चित्रपठन)	125–131	अ, इ, उ, ए		05
14.	चालाक चीकू	132–142	आ, ई, ऊ, ऐ		10
15.	पुनरावर्तन	143–147			05
16.	हरे–पेड़ (वार्तालाप)	148–159	चंद्रबिन्दु संयुक्ताक्षर (समान व असमान अक्षर)		10
17.	लालची कुत्ता (चित्रकथा)	160–171	अनुस्वार, संयुक्त 'र'		10
18.	दो दोस्त (कहानी)	172–183			10
19.	शेर और सियार (कहानी)	184–195			10
20.	पुनरावर्त्तन	196–200			05